I Lecture Series No:- 67

Online class,
Date - 21/2/2022
Day - Thursday
Time - 10:to 10:50 A.M

Topic,

Dr. Surita Kumari
Depart. of philosophy,
B.A part - I
paper - (5.)
A.N.D. college Shahpur patory,
Samastipur,

(1) epistemology,

Ans :-> चार्वाक दर्शन की ज्ञानमीमांसा अथवा ज्ञान का सिद्धांत प्रत्यक्ष प्रमाण पर ही अवलम्बित है। इस प्रकार ज्ञान-प्राप्ति के लिए चार्वाक ने प्रत्यक्ष प्रमाण को एकमात्र साधन माना है। हालांकि समस्त भारतीय दर्शनों ने प्रत्यक्ष को भी प्रमाण माना है। जबकि चार्वाक ने केवल मात्र प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानकर अनुमानादि को प्रमाण

P.T.O.

(2)

रूप में स्वीकार नहीं किया है। अपने विकास के प्रारम्भिक काल में चार्वाक केवल मात्र आँखों से देखने को ही प्रत्यक्ष कहते थे। किन्तु बाद में उन्होंने समस्त अनुमानादि की ज्ञानेन्द्रियों के

आधार पर पाँच प्रकार के प्रत्यक्ष कहते थे किन्तु बाद में उन्होंने समस्त अनुमानादि की ज्ञानेन्द्रिय के आधार पर पाँच प्रकार के प्रत्यक्ष को

स्वीकार किया है। अतः सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक हो जाता है कि चार्वाक के अनुसार प्रत्यक्ष क्या है, चार्वाक दर्शन के अनुसार जो पाँचों ज्ञानेन्द्रियों से ग्रहण होता है वह प्रत्यक्ष होता है। इस प्रकार ज्ञानेन्द्रियों के पाँच होने से प्रत्यक्ष भी पाँच प्रकार का होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष की श्रेणी में दो प्रकार

P.T.O.

के ज्ञान आते हैं :- एक बाह्य प्रत्यक्ष तथा दूसरा आन्तरिक प्रत्यक्ष। इसके अतिरिक्त दूसरा आन्तरिक प्रत्यक्ष भी बाह्य प्रत्यक्ष पर ही निर्भर करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि चार्वाक दर्शन में इन्द्रिय ज्ञान को ही एकमात्र यथार्थ ज्ञान माना गया है। चार्वाक ने अपने मत का प्रतिपादन करने के लिए अनुमान तथा शब्द प्रमाणों का भिन्न युक्तियों द्वारा खंडन किया है।

(i) अनुमान प्रमाण का खंडन :-

चार्वाक दर्शन में इन्द्रियजन्य ज्ञान को ही यथार्थ ज्ञान माना गया है। इन्द्रियजन्य ज्ञान में भी कर्म रहित प्रत्यक्ष को ही यथार्थ ज्ञान कहा गया है। " END "